दादा भगवान परिवार का

नवम्बर २०१८

शुल्क प्रति नकल : ₹ 20/-

अक्रम एक्सप्रेस

दादा भगवान

संपादकीय

बालमित्रों,

१९५८ की एक संध्या, भीड़ से भरा सूरत का रेल्वे स्टेशन। लोगों की भीड़ और कोलाहल के बीच, स्टेशन के एक बेंच पर बैठे हुए अंबालाल भाई को आत्मदर्शन प्राप्त हुआ। ४८ मिनिट तक उन्हें विश्व दर्शन हुआ। जगत् के सभी गूढ़ रहस्य जैसे कि मैं वास्तव में कौन हूँ? आत्मा क्या है? कैसा है? पाप-पुण्य क्या है? जगत् किस आधार से चल रहा है? कर्म क्या है? वह किस तरह से बंधता है? उससे किस तरह छूटा जा सकता है? मुक्ति किस तरह मिलती है? आदि... कई प्रश्नों के जवाब इन ४८ मिनिटों में मिल गए। उनके अंदर "दादा भगवान" प्रकट हुए। तभी से लोग उन्हें "दादा भगवान" की तरह जानने लगे।

दादाश्री के बारे में ऐसा जानने के बाद हमें खुद ही ऐसी इच्छा हो ही जाएगी कि ऐसे ज्ञानीपुरुष का बचपन कैसा होगा? बचपन में उनके जीवन का ध्येय क्या था? बचपन में उनकी क्या विशेषताएँ थीं?

तो आइए, इस अंक में जानते हैं, दादा भगवान की मानव में से महा मानव बनने की जर्नी की कुछ झाँकियाँ। उनके गुणों की प्रशंसा करके, हम भी ऐसे गुणों का सेवन करने की भावना करेंगे।

और आपको जानकर खुशी होगी कि इस महीने "दादा भगवान" का १११ वाँ जन्म दिन अडालज में भव्य रूप से मनाया जा रहा है। उसमें आप सभी को भी ज़रूर ज़रूर आना है। आओगे न?

- डिम्पल मेहता

दादा भगवान

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2018, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

वर्ष : ६ अंक: ८
अखंड क्रमांक: ६८
नवम्बर २०१८

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

अक्रम एक्सप्रेस

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

परिवार का परिचय

दादाश्री का जन्म नवम्बर ७, १९०८ के दिन, तरसाली गाँव में हुआ था। उनको अंबालाल नाम दिया गया। उनके फादर श्री मूलजी भाई पटेल, ब्रॉड विज़न और खानदानी थे। और मदर झवेर बा, सरल हृदय, दयालु, लागणीशील और उच्च समझ वाली थीं। फादर-मदर प्योरिटी के साथ लोगों की मदद करते हुए जीवन जीते थे। ऐसे संस्कार बालक अंबालाल को मिले थे।

बचपन की विशेषताएँ

सामान्यत : छोटे बच्चों को सुख, अनुकूलता, वैभव और मोज़मज़ा ही अच्छा लगता है। आपको भी अच्छा लगता ही होगा... अच्छा लगता है न? लेकिन बालक अंबालाल को यह सब अच्छा नहीं लगता था। वे कहते थे कि पिछले जन्म में वे सब वैभव देखकर आए हैं। इसलिए उन्हें पहले से ही भौतिक वैभव ज़रा भी अच्छा नहीं लगता था। उन्हें वैभव भोगने में नहीं, बल्कि जगत् की हकीकत जानने में रुचि थी।

वैभव नहीं, ऑब्ज़र्वेशन में रुचि

बचपन में अंबालाल को "सात समोलियो" का उपनाम मिला था।

पढ़ाकू को एक समोलियो कहते हैं। उसे सिर्फ पढ़ना ही अच्छा लगता है। जब कि सात समोलियो तो हर प्रकार का ध्यान रखता है। माता-पिता की सेवा करता है, पैसे किस तरह आते हैं, कहाँ नुकसान होता है, माता-पिता की क्या स्थिति है, सब कुछ लक्ष (जागृति) में होता है। ऐसा सात समोलियो कोई-कोई व्यक्ति ही होता है। अंबालाल ऐसे व्यक्ति थे।

सात समोलियो

बचपन से ही अंबालाल के असाधारण विचार थे। तेरह साल की उम्र में ही उन्हें असामान्य व्यक्ति (सभी से बिल्कुल अलग) होने का विचार आया था। असामान्य अर्थात् सामान्य व्यक्ति को जो तकलीफ पड़ती है, वह असामान्य व्यक्ति को तकलीफ ही नहीं पड़ती। असामान्य व्यक्ति हमेशा ओरों की हेल्प के लिए ही होते हैं।

जो कोई नहीं कर सकता, वह उन्हें करना था। बचपन से ही उन्हें लगता था, "दुनिया की चीज़ों के तो बहुत लोग जानकार हैं। जिसका कोई जानकार नहीं है, उसका मुझे जानकार बनना है।"

असामान्य व्यक्ति

अंबालाल को घर से बाहर कहीं काम करने जाना होता, तो अडोसी-पड़ोसी से पूछकर उनका काम भी साथ में ही पूरा कर आते थे। इस तरह अपना काम करते-करते, आसपास वालों को भी हेल्प फुल होते। खुद को आनंद आता और आसपास वाले भी खुश रहते।

जब भादरण से बड़ोदा जाते तब लोगों द्वारा मँगवाई हुई चीज़ें भी खरीदकर ले आते। अपने पैसे डालकर "चीज़ सस्ती मिली" ऐसा कहते। लोगों को दुःख न हो इस तरह हेल्प करते।

ऑब्लाइज़िंग नेचर

सरलता

उनके जीवन का मुख्य गुण सरलता था। दूसरों की सही बात को वे तुरंत एक्सेप्ट कर लेते थे।
तेरह साल के अंबालाल जब घोड़ी पर बैठने गए तो घोड़ी ने उन्हें गिरा दिया।
उन्होंने भाई से कहा, "घोड़ी ने मुझे गिरा दिया।"
भाई ने कहा, "घोड़ी क्या ऐसे ही तुझे गिरा देगी? तुझे बैठना नहीं आया होगा।"
इस बात पर वे बहुत सोचने लगे और फिर समझ में आया कि बात सही है, मुझे बैठना नहीं आया!
वे सरलता से अपनी भूल स्वीकार कर लेते थे और वह उपदेश पूरी ज़िंदगी उनकी जागृति में रहता।

एडजस्टमेन्ट

सभी के मन का समाधान करने के लिए वे कई एडजस्टमेन्ट लेते।

वे जब युवा थे तब एक बार फ्रेन्ड के यहाँ खाना खाने गए। फ्रेन्ड ने उन्हें खाना खाने के लिए बिठाया। वहाँ उन्होंने खाना खाया। वापस लौटते समय एक पहचान वाले मिले और वे उन्हें अपने घर खाना खाने के लिए ले गए। तो वहाँ भी थोड़ा खाया। अंत में घर आकर मदर के साथ भी खाना खाया। यदि मदर के साथ नहीं खाते तो मदर को दुःख होता। यानी एक ही टाइम में तीन-तीन बड्डार खाना खाया।

किसी को दुःख नहीं हो इसलिए ऐसा एडजस्टमेन्ट।

लोभ, लालच और ममता रहित

गाँव में छोटे अंबालाल सभी दोस्तों के साथ खेत में आते। मोगरी, मूली, शकरकंदी आदि तोड़कर खाते। वहाँ खाने के बाद सभी बच्चे घर बाँधकर ले जाते लेकिन अंबालाल कुछ साथ में नहीं ले जाते। संग्रह करने की आदत ही नहीं थी। लोभ, लालच, ममता पहले से ही उनमें नहीं थे।

निडरता

छोटे बच्चों को जैसे भूत, साँप, बिच्छू आदि से डर लगता है, वैसे अंबालाल को भी लगता था। लेकिन उनकी विशेषता यह थी कि, वे भय का सामना करते। वास्तविकता में भय है या नहीं, किस वजह से भय लगता है, वह उसकी जड़ में से ढूँढ निकालते। उन्हें खुद पर इतनी श्रद्धा थी कि "मुझे कुछ होगा ही नहीं।"

एक बार उन्हें ऐसी बात सुनने में आई कि महुडा के पेड़ में भूत रहता है। पता लगाने पर मालूम हुआ कि एक व्यक्ति अँधेरी रात को बीड़ी जलाता था।

इस तरह, अपने निडर स्वभाव से, सही क्या है? वह ढूँढ निकाला।

एक बार बारह-तेरह साल की उम्र में, अंबालाल अपने परिवार को सब्ज़ी परोस रहे थे। उन्होंने सब से कम सब्ज़ी अपने फादर की थाली में परोसी। उससे थोड़ी ज्यादा चाचाजी को परोसी। बाकी सभी को उनसे ज्यादा परोसी। जिससे किसी को ऐसा नहीं लगे कि इसके पिता है इसलिए उन्हें ज्यादा दी और हमें कम।

तभी से लोग यह समझ गए कि "यह लड़का विनय वाला है।"

छोटी उम्र से ही वे समझते थे कि, जगत् उनका और पिता का संबंध समझता है। इसलिए उन्हें ज्यादा नहीं दे सकता।

विचारशील

अंबालाल खेल खेलते थे, फिर भी विचक्षण रहते। उन्होंने पतंग उड़ाने में कभी टाइम नहीं बिगाड़ा। वे कहते कि पतंग उड़ाने में मज़ा नहीं है, फायदा नहीं है। वास्तव में मकर संक्रांति के दिन सूर्य आँख में दिखे वह हितकारी है। इसलिए लोग पतंग उड़ाते हैं, उन्हें वे देखते थे। उन्होंने लोगों का अनुकरण करके कभी कुछ नहीं किया।

पटाखे फोड़ने में भी उन्होंने निष्कर्ष निकाला। राजा खुद पटाखे फोड़ता है या नौकर से फुड़वाता है? किसी भी राजा ने पटाखे नहीं फोड़े हैं। नौकर से ही फुड़वाए हैं। अतः ओर लोग पटाखे फोड़ते थे वे आराम से उन्हें देखते थे और आनंद लूटते।

बालक अंबालाल की विचक्षण बुद्धि को हित और अहित का पता चल ही जाता था।

विचक्षण

अंबालाल भाई के पास प्रकृति का निरीक्षण करके, पॉज़िटिव गुणों को ढूँढकर व्यक्तियों को सुधारने का एक अनोखा तरीका था।

एक दिन एक लड़का बहुत रो रहा था। अंबालाल ने एक कागज़ लिया और बच्चे से कहा, "देख यह कागज़ कितना अच्छा है! अपना हाथ ला तो!" कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़े करके, उन्होंने उस बच्चे के छोटे से हाथ में रखे और उस बच्चे से कहा, "अब, एक-एक टुकड़ा मुझे दे तो।"

बच्चा कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़े बीनकर एक के बाद एक अंबालाल भाई के हाथ में रखता गया। ऐसी प्रवृत्ति में मग्न हो जाने की वजह से वह आनंदित हो गया और अपना रोना भूल गया।

इस तरह बच्चों की प्रकृति का निरीक्षण करके, वे उनका मन जीत लेते थे।

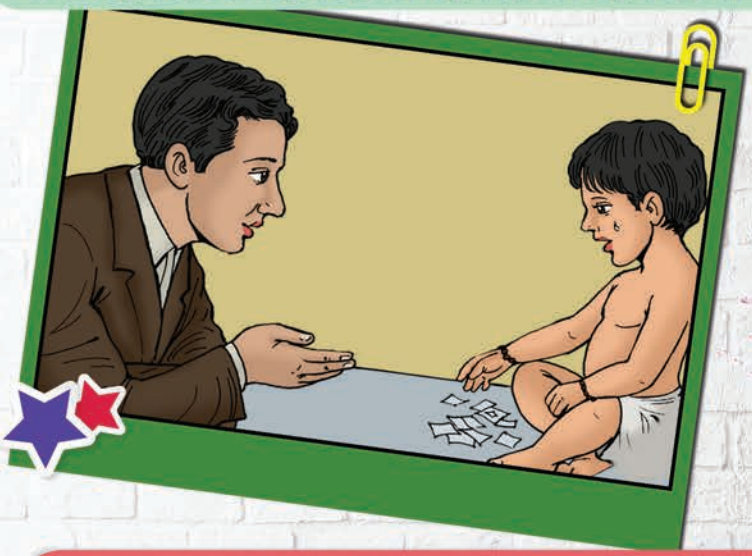

प्रकृति का निरीक्षक

एक बार अंबालाल भाई के भागीदार के लड़के को बुखार आ गया था और वह दवा पीने में आनाकानी कर रहा था।

उसने कहा, "मुझसे तो यह दवाई नहीं पी जाएगी। बहुत कड़वी है।" उल्टी होकर सब बाहर निकल जाएगी। अंबालाल भाई ने समझाया, "देख, ऐसा डर रखने की ज़रूरत नहीं है। हे भगवान मुझे कड़वी दवाई पीने की शक्ति दीजिए।" ऐसे पाँच बार बोलकर पी जा, कुछ नहीं होगा।

भागीदार का लड़का अंबालाल भाई के कहे अनुसार पाँच बार बोलकर दवाई पी गया। लेकिन उसे लगा, "अभी उल्टी हो जाएगी।"

अंबालाल भाई ने उसे समझाया, "नहीं होगी! ऐसा उल्टा सोचना ही नहीं है। पॉज़िटिव ही रखना है कि इस दवाई से बुखार मिट ही जाएगा।"

इस तरह, अंबालाल भाई बच्चों को सच्ची समझ देकर, उनकी उल्टी मान्यताओं को छुड़वाते थे।

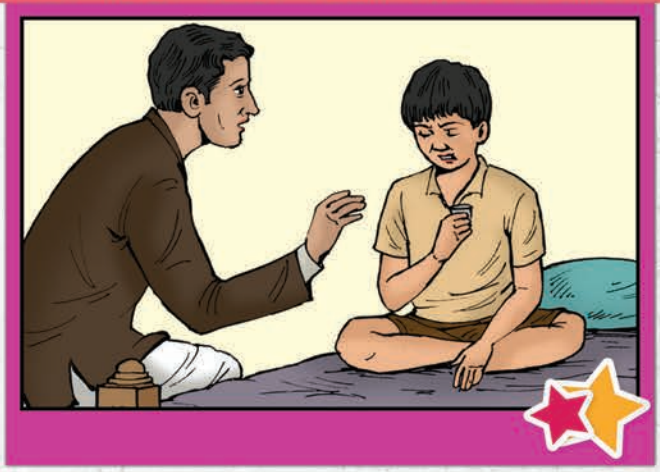

आज की जनरेशन के लिए दादा के शब्द।

"आज का युवा वर्ग ऐसा है कि जो किसी भी काल में नहीं था, जो युवा वर्ग शुद्ध है, प्योर है।"

"आज का जनरेशन हेल्दी माइन्ड वाला है। मैं उन्हें अच्छी तरह पहचान सकता हूँ।"

"यह कुदरत का उपहार है कि यह जनरेशन बिल्कुल हेल्दी माइन्ड वाली है। और जब ऐसा जनरेशन आता है तब वर्ल्ड का कल्याण करता है। उसे मार्गदर्शन देने वाला चाहिए।"

"यदि मार्गदर्शन मिलेगा तो हिन्दुस्तान ऑल राइट (ठीक) हो जाएगा और अब बस कुछ ही समय में मार्गदर्शन देने वाला मिल जाएगा।"

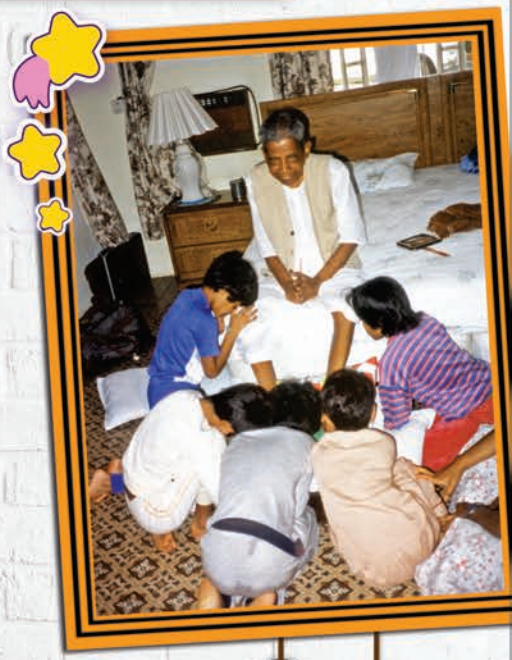

दादाश्री की भावना के अनुसार, इस हेल्दी माइन्ड वाली जनरेशन को प्रेम और वात्सल्य के साथ सही मार्गदर्शन देने की ज़िम्मेदारी, पूज्य नीरू माँ ने ले ली। और पूज्य दीपक भाई ने बच्चों की प्रवृत्ति आगे बढ़ाने का काम किया। नीरू माँ बच्चों की शिविर करते। हर एक को पर्सनल टच देते। उनके शुद्ध प्रेम से बच्चे अपने आप ही खिंचकर आ जाते।

उसके बाद पूज्यश्री ने, बच्चों को उनके लेवल पर सही समझ मिले उसके लिए GNC "ज्ञानी की छया में".... की शुरुआत की। आज गाँव-गाँव में GNC के सेन्टर खुल गए हैं। जिसमें उम्र के अनुसार ग्रुप बनाए गए हैं। बिल्कुल छोटे बच्चों के लिए BMHT (बेबी महात्मा), छोटे बच्चों के लिए LMHT (लिटल महात्मा) और युवा वर्ग के लिए YMHT यंग महात्मा। आज हज़ारों बच्चे इसका लाभ ले रहे हैं। ज्ञानी के विशुद्ध प्रेम की छाछाया में खिल रहे हैं।

GNC में बच्चों से संबंधित सभी इवेन्टस्, एक्टिविटीज और मटीरियल्स (बाल विज्ञान) पूज्यश्री की देखरेख में तैयार किया जाता है। परम पूज्य दादाश्री के शब्दों और भावनाओं को ध्यान में रखकर पूज्यश्री दीपक भाई योग्य मार्गदर्शन देते रहते हैं। परम पूज्य दादाश्री की और पूज्य नीरू माँ के प्रेम के साथ संस्कार का सिंचन करके बच्चों को खिलने की कला, पूज्य दीपक भाई ने देखी थी और अनुभव की थी। उन्हें GNC के माध्यम से हर एक बच्चे तक पहुँचे ऐसी उमदा भावना है। दादा की बताई हुई ऐसी सुख की सरल चाबियाँ बच्चों तक भी पहुँच रही हैं।

बाल दोस्तों ! यह आपका मनपसंद "अक्रम एक्सप्रेस" भी उसका ही एक भाग है न!

ऐसे अपने प्यारे दादाश्री का आने वाला बर्थ डे, यानी कि उनकी १११ वीं जन्म जयंती हमारे लिए कितना खास दिन कहा जाएगा! और फिर, इस दिन का अपना एक विशेष महत्व भी है। दिवाली और गुरुपूनम की तरह ही, जन्म जयंती भी ऐसा पवित्र दिन है कि जब, दादा भगवान अपने पूर्ण स्वरूप में प्रकट होते हैं। उस दिन उनसे सच्चे हृदय से जितनी शक्तियाँ माँगेंगे उतनी हमें मिलेंगी। हम सब उनके ऐसे अलौकिक दर्शन करने का लाभ भी लेंगे। तो मित्रों, हम ऐसा अमूल्य मौका थोड़े ही चूक जाएँगे?

दादाश्री की जन्म जयंती के दिन महात्मा शोभायात्रा निकालते। खूब भक्ति से उसमें भाग लेते। पद गाते, आनंद और उल्लास से नाचते... जैसे दुनिया को तो भूल ही जाते। फिर दादाश्री के अलौकिक दर्शन का आयोजन होता। विधि, भक्ति और प्रसाद लेने के बाद सब जाते।

इस तरह, दादाश्री की जन्म जयंती एक महान महोत्सव के रूप में मनाई जाती है।

आइए, देखते हैं दादाश्री की १०० वीं जन्म जयंती की यादगार पलें...

इसके बाद दादाश्री की जन्म जयंती हर साल अलग-अलग गाँव में या शहर में मनाई जाती है। ५-६ दिन के इस भव्य महोत्सव में बड़ा सा किड्स् पार्क बनाया जाता है जिसमें बच्चों और यूथ को मज़ा आए ऐसी अलग-अलग एक्टिविटी होती हैं। खेल-खेल में ज्ञान देता हुआ यह चिल्ड्रन पार्क, बच्चों को इसे छोड़कर जाना अच्छा नहीं लगता। यह तो कितना मज़ेदार बर्थ डे सेलिब्रेशन है!

It's One For 111

लेकिन, GUESS WHAT ! इस बार तो, हमारे परम पूज्य दादाश्री की १११ वीं जन्म जयंती का सेलिब्रेशन है। और यह तो कुछ अलग और ज़ोरदार, धमाकेदार होने वाला है।

आपको पता है, कहाँ?

हमारे ही घर के पास! अडालज त्रिमंदिर के रमणीय वातावरण में! ..., आपको पता है दोस्तों, हमारे प्रिय पूज्य दादाश्री भी मूल अडालज गाँव के ही है।

पूज्य श्री दीपक भाई की दिव्य हाज़िरी में! .... उस धरती पर जो पूज्य नीरू माँ की कृपा से पावन हुई है...

और मित्रों, आपको पता है? इस बार उसकी विशेषता क्या है? उसका नाम दिया गया है - "देखने जैसी दुनिया"

आपके लिए ही खास बनाई गई यह मज़ेदार **"देखने जैसी दुनिया"** देखने आओगे न? हम आप सभी का इंतज़ार करेंगे।

Spectacular Puppet Show

कल्चरल शो, लाइव ड्रामा,
कवीज़ एन्ड ड्रॉइंग कॉम्पिटिशन,
वन मिनिट गेम्स् और दूसरा
बहोत कुछ...

KIDS CASTLE
इस केस्टल के अंदर जाने के लिए अपना पासपॉर्ट ले लो।

हम सभी को मिलने के लिए ऐनिमल प्लेनेट की मुलाकात लीजिए।

चलो देखते हैं, किसे मिला Honest - BEE AWARD
2D animation

Aage se right

इस काल में युवाओं की उलझनों के समाधान के लिए **YMHT** सेशन और वर्कशॉप्स् की झाँकी...

Dada in my life

Mit Sakti hai duriya

आपके स्मार्ट फोन ने आपकी फैमिली की जगह तो नहीं ले ली है न? अब समय आ गया है,

इस पर सोचने का...

इस डेकोरेटिव गेम के द्वारा जीवन जीने का सही तरीका सीखे और आपके जीवन के अच्छे पहलुओं को पहचानिए।

Udaan

'Adjust Everywhere & Avoid Clashes'

गेम्स् खेले और जानिए दादा के सिद्धांतो के बारे में।

Selfie li kya ?

दुनिया को बदलने के लिए अपने आप को बदलो।

Venue : Trimandir, Simandhar City, Ahmedabad-Kalol Highway, Dist Gandhinagar, Gujarat -382421

Save the dates : November 15th to 25th, 2018

Timings of GNC PARK : 4.00 p.m to 10.00 p.m.

Akram Express
November 2018
Year : 6, Issue : 8
Conti. Issue No.: 68

BALVIGNAN
Fun 'n' Gyan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

To Explore Akram Science &
Experience Eternal Bliss

Come To
JOVA JEVI DUNIYA
A Global Event

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए खास जानकारी कि अगले महीने से कुछ कारणों से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस पब्लिश करना बंद कर रहे हैं। अब से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस **Akonnect app** *या* **Kids Website** *की नीचे दी गई लींक से डाउनलोड करके पढ़ सकेंगे।*

https://kids.dadabhagwan.org/knowledgehouse/magazines/Hindi/All+Years/All+Months/

अभी जो हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस केऐक्टिव मेम्बर हैं, उन्होंने मेम्बरशिप रजिस्टर करने केदौरान जो रकमदी थी, वह पूरी रकम उनको मनी ऑर्डर द्वारा वापस भेज दी जाएगी।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025